योग पूर्व पृष्ठ	+	पृष्ठ 5 के अंक	=	कुल अंक
		6		1

उत्तर क्र. 1

स्थायी किश्त प्रणाली की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं —

1 प्रतिवर्ष शेष कम → इस प्रणाली से ह्रास लगाने पर संपत्ति को मूल्य या शेष प्रतिवर्ष कम होता जाता है।

2.1 ह्रास की समान राशि → इस प्रणाली में ह्रास की राशि प्रतिवर्ष समान होती है।

2 ह्रास मूल लागत पर → इस प्रणाली में ह्रास प्रतिवर्ष सम्पत्ति की मूल लागत पर निकाला जाता है।

उत्तर क्र. 2

प्रेषण में प्रेषित माल के अप्राकृतिक कारणों से होने वाली हानि को असामान्य हानि कहते हैं। इस हानि को सतर्क एवं सजग रहकर नियंत्रित

6

पृष्ठ के अंकों का योग

(6) योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 6 के अंक कुल अंक

किया जा सकता है।
जैसे → रास्ते में माल का टूट जाना, चोरी हो जाना आदि।

उत्तर क्र 3

भारतीय बहीखाता प्रणाली में स्तम्भो की जगह सलें होती हैं। चार जमा पक्ष की व चार नाम पक्ष की है सलें होती हैं। प्रत्येक पक्ष की पहली सल सिरा व शेष तीन सलें पेटा होती हैं।
'सिरा' सल में रकम लिखी जाती है।

B S E M P

3

उत्तर क्र 4

भारतीय बहीखाता प्रणाली में नाम नकल बही व जमा नकल बही के अतिरिक्त एक और नकल बही होती है, जिसे खुदरा नकल बही कहते हैं।

खुदरा नकल बही में उधार संपत्तियों के उधार क्रय - विक्रय, समायोजन व अशुद्धियाँ सुधार सम्बन्धी आदि लेखों को लिखा जाता है।

उत्तर क्र. 5

रोकड़ पद्धति गैर-व्यापारिक संस्थाओं तथा पेशेवर व्यक्तियों द्वारा प्रयुक्त की जाती है। इस पद्धति में केवल रोकड की प्राप्ति एवं भुगतान का ही लेखा किया जाता है। इस पद्धति में प्राप्ति - भुगतान खाता, आय - व्यय खाता तथा चिट्ठा बनाया जाता है।

उत्तर क्र. 6

प्रेषित माल का बीजक मूल्य =

$$= \text{लागत मूल्य} + \text{लागत मूल्य} \times \frac{\text{दर}}{100}$$

$$= 40{,}000 + 40{,}000 \times \frac{10}{100}$$

$$= 40{,}000 + 4000$$

= 44,000 रु.

प्रेषित माल का बीजक मूल्य 44,000 रुपये होगा।

उत्तर क्र. 7

प्राप्ति - भुगतान खाते की दो विशेषताएँ निम्नलिखित हैं —

1. प्राप्ति - भुगतान खाते में पूँजीगत एवं आगमगत सम्बन्धी समस्त मदों को लिखा जाता है।

2. प्राप्ति - भुगतान खाते में समायोजनों का लेखा नहीं किया जाता है।

उत्तर क्र. 9

लाभ - हानि नियोजन खाता, लाभ-हानि खाते का परिवर्ती रूप है।

B S E M P

3

पृष्ठ के प्राप्तांक का योग

यह खाता यह दर्शाता है कि साझेदारों की पूँजी को प्रभावित करने वाली मदें कौन - कौन सी हैं तथा साझेदारों में लाभ - हानि का वितरण किस प्रकार किया गया है।

उत्तर क्र 10

कम्पनी को बहुत बड़ी मात्रा में पूँजी की आवश्यकता होती है, जिसे वह अनेक व्यक्तियों से प्राप्त करती है। कम्पनी अपनी सुविधा के लिए पूँजी को छोटे - छोटे भागों में बाँट देती है। यह छोटा भाग ही अंश कहलाता है।

उत्तर क्र. 11

प्रत्येक उद्योग एवं व्यवसाय में कार्य संचा हेतु स्थायी संपत्तियों का प्रयोग किया जाता है। अत: निरन्तर प्रयोग के कारण संपत्तियों के मूल्य में कमी होना स्वाभाविक है। चूँकि संपत्ति के मूल्य में कमी निरंतर प्रयोग के कारण होती है और उत्पादन हेतु संपत्ति का पूर्ण उपयोग किया जाता है। अत: संपत्ति के मूल्य में कमी होने से व्यापार को हानि होती है। इस कारण ~~ह्रास~~ ह्रास का लेखा अवश्य करना चाहिए। इस प्रकार कहा जा सकता है कि "मूल्यह्रास लाभ के विरुद्ध समायोजन नहीं अपितु व्यय भार है।"

उत्तर क्र. 14

प्रेषण व्यवहार में निम्नलिखित खाते खोले जाते हैं —

प्रधान की पुस्तकों में →

1. प्रेषण खाता,
2. प्रेषित माल खाता,

(11) [ ] + [ ] = [2]

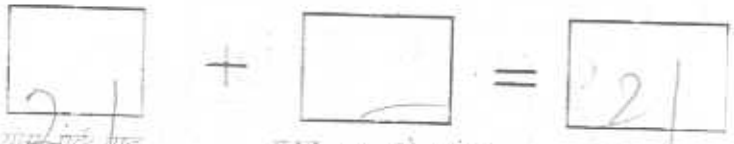

पिछले पृष्ठ   पृष्ठ 11 के अंक   कुल अंक

3. एजेण्ट का खाता,

4. प्रेषण स्कंध खाता,

5. प्राप्य बिल खाता।

प्रेषिती (एजेण्ट) की पुस्तकों में →

1. प्रधान का व्यक्तिगत खाता,

2. देय बिल खाता,

3. कमीशन खाता।

उत्तर क्र. 13

कमीशन की गणना →

साधारण कमीशन →

कुल बिक्री = 400 x 200

= 80,000 रु.

(12) 21 योग पूर्व पृष्ठ + 3 पृष्ठ 12 के अंक = 25 कुल अंक

साधारण कमीशन → 60,000 × 10/100

= 6000 रु.

अधिभावी कमीशन ⇒ विक्रय मूल्य – बीजक मूल्य

= 80,000 – 60,000
= 20,000

= 20,000 × 20/100

= 4000 रु.

कुल कमीशन = 6000 + 4000
= 10,000 रु.

B S E M P

Ans. कुल कमीशन 10,000 रु. होगा।

(13) 25 + 2 = 27
योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 13 के अंक | कुल योग

उत्तर क्र. 17

जैन लिमिटेड की पुस्तक (जर्नल)

विवरण	खा. पृ.	रकम (डे.)	रकम (क्रे.)
बैंक खाता डे.		1,00,00,000	
To, 12% पूर्वाधिकार अंशधारियों का खाता			10000,000
(एक मुश्त राशि प्राप्त होने पर)			
12% पूर्वाधिकार अंशधारियों का खाता डे.		1,00,00,000	
To, 12% पूर्वाधिकार अंशपूँजी खाता			1,00,00,000
(प्राप्त राशि को पूर्वाधिकार अंशपूँजी खाते में ले गए)			
योग		2,00,00,000	2,00,00,000

14 | 27 + 3 = 30
पिछले पृष्ठ | पृष्ठ 14 के अंक | कुल अंक

उत्तर क्र. 18

लाभ - हानि वितरण खाता
31 दि. 2004 को समाप्त होने वाले वर्ष के लि

Dr

विवरण	रकम	विवरण	रकम
To, चिन्टू के ऋण पर ब्याज	80	By शेष नीलाम	4000
To लाभ - चिन्टू का पूंजी खाता 1960, मोन्टू का पूंजी खाता 1960	3920		
	4000		4000

नोट →

ऋण पर ब्याज $= \frac{4000 \times 6^{2}}{100} \times \frac{4}{12_{3}}$

$= 80$

लाभ का वितरण $= 4000 - 80$

$= 3920$

$= \frac{3920}{2}$ 1960

नोट → साझेदारी संलेख के अभाव में साझेदारों में लाभ - हानि का विभाजन समान होगा तथा साझेदार द्वारा दिये गये ऋण पर 6 % वार्षिक की दर से ब्याज दिया जायेगा।

उत्तर क्र. 19

कच्ची रोकड़ बही
पन्ना नं. 15

॥ श्री लक्ष्मी जी सदा सहाय होवे ॥

जमा	नामे
5000) श्री रोकड़ बाकी जमा	600) श्री रानी के खाते नामे 600) उधार माल बेचा
600) श्री माल खाते जमा 600) रानी को उधार माल बेचा	100) श्री मजदूरी खाते नामे 100) मजदूरी नकद दी
600) श्री सुरेश के खाते जमा 600) उधार माल खरीदा	600) श्री माल खाते नामे 600) सुरेश से उधार माल खरीदा
1000) श्री लक्ष्मी नारायण के खाते जमा 1000) चैक मिला	100) श्री सुरेश के खाते नामे 100) सुरेश को नकद दिये
7200)	1500)

BSEMP

4
अंकों का योग

जमा

नामे

5200) श्री रोकड बाकी रहे

(6300)

उत्तर क्र. 20

1. यंत्र के मूल्य में वृद्धि होने पर -

विवरण	खा.पृ.	रकम (रु.)	रकम
यंत्र खाता डे. To. पुनर्मूल्यांकन खाता (यंत्र के मूल्य में वृद्धि होने पर)			

2. लेनदार में कमी होने पर -

विवरण	खा.पृ.	रकम (रु.)	रकम (
लेनदार का खाता डे. To. पुनर्मूल्यांकन खाता (लेनदार में कमी होने पर)			

योग पूर्व पृष्ठ 37 + पृष्ठ 17 के अंक 1 = कुल अंक

उत्तर क्र 22

फर्म से निवृत होने वाले साझेदार को दी जाने वाली राशियाँ –

1. पूँजी प्राप्त करने का अधिकार,
2. पूँजी पर ब्याज यदि दिया जाता है तो,
3. संचित कोष मे हिस्सा,
4. उस वर्ष या माह के लाभ मे हिस्सा जब तक वह फर्म मे था,
5. संपत्तियो व दायित्वो के पुनर्मूल्यांकन से लाभ या हानि मे आनुपातिक हिस्सा,
6. ख्याति का अनुपातिक हिस्सा
7. यदि फर्म को ऋण दिया हो तो ऋण व ब्याज सहित राशि
8. अन्य कोई राशि जो निवृत साझेदार को देना अनिवार्य हो।

उपर्युक्त राशियों को जोड़कर आहरण, आहरण पर ब्याज व पुनर्मूल्यांकन मे हानि आदि को घटा देना चाहिए, तब जो राशि शेष बचेगी, वह निवृत होने वाले साझेदार को दी जायेगी।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(18) 1 + 3 = 4

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 18 के अंक | कुल अंक

मध्यप्रदेश

BSEMP

3

उत्तर क्र. 23

पूनम लिमिटेड की जर्नल

विवरण	बा. पृ.	रकम (रु.)	रकम (
बैंक खाता (5000 × 30) डे.		1,50,000	
To. 10% ऋणपत्र आवेदन खाता			1,50,00
(ऋणपत्रों पर आवेदन राशि प्राप्त होने पर)			
10% ऋणपत्र आवेदन खाता डे.		1,50,000	
To. 10% ऋण पत्र खाता			1,50,00
(आवेदन राशि को ऋणपत्र खाते में ले गए)			
10% ऋणपत्र ~~आवेदन~~ आवंटन खाता (5000 × 65) डे.		325,000 ~~475,000~~	
बट्टा खाता (5000 × 5) डे.		25,000	
To. 10% ऋणपत्र खाता			3,50,00 ~~5,00,00~~
(ऋणपत्रों पर आवंटन राशि बट्टा सहित देय होने पर)			
बैंक खाता डे.		3,25,000 ~~9,75,000~~	
To. 10% ऋणपत्र आवंटन खाता			3,25,000 ~~9,75,00~~
(आवंटन राशि प्राप्त होने पर)			
योग		~~9,75,000~~	975,000

उत्तर क्र. 24

Dr. वसूली खाता

विवरण	रकम	विवरण	रकम
To, स्कंध	10,000	By लेनदार	3000
" देनदार	11,500	" बैंक खाता (9000+9200)	18200
" बैंक खाता	2700	" हानि —	
" बैंक खाता	500	A का पूँजी खाता 1750	
		B का पूँजी खाता 1750	3500
	24,700		24,700

उत्तर क्र. 25

गंजबासौदा प्रेषण खाता

Dr. Cr.

विवरण	रकम	विवरण	रकम
To, प्रेषित माल खाता	15,000	By, सोनी का खाता	25,000
" रोकड़ खाता	450		
" सोनी का खाता	530		
" सोनी का खाता	1250		
" लाभ-हानि खाता	7770		
	25,000		25,000

B S E M P

लागत मूल्य = $\frac{\text{विक्रय मूल्य} \times 100}{100 + \text{दर}}$

$= \frac{18750 \times 100}{100 + 25}$

$= \frac{1875000}{125}$ ~~375000~~ ~~75000~~ 15000

लागत मूल्य = 15,000 रू.

उत्तर क्र. 26

प्राप्ति - भुगतान खाते एवं ~~आय~~ आय - व्यय खाते में अंतर निम्नलिखित है -

प्राप्ति - भुगतान खाता	आय - व्यय खाता
1. प्राप्ति - भुगतान खाते का उद्देश्य रोकड़ शेष ज्ञात करना होता है।	आय - व्यय खाते का उद्देश्य बचत या घाटा ज्ञात करना होता है।
2. इस खाते में आगमगत व पूँजीगत सभी मदों को लिखा जाता है।	इस खाते में सिर्फ आगमगत आय व व्यय की मदों को ही लिखा जाता है।

BSEMP

योग पूर्व पृष्ठ	पृष्ठ 23 के अंक	कुल अंक
57	6	63

प्राप्ति भुगतान खाता	आय - व्यय खाता
3. इस खाते में समायोजनों का लेखा नहीं किया जाता है।	इस खाते में समायोजनों का लेखा किया जाता है।
4. इस खाते को बनाने के बाद चिट्ठा नहीं बनाया जाता है।	इस खाते को बनाने के बाद चिट्ठा बनाया जाता है।
5. इस खाते के डेबिट पक्ष में समस्त प्राप्तियाँ एवं क्रेडिट पक्ष में समस्त भुगतान लिखे जाते हैं।	इस खाते के डेबिट पक्ष में ~~समस्त~~ व्यय एवं क्रेडिट पक्ष में आय लिखी जाती है।

उत्तर क्र. 29

6

मूल्य ह्रास की उत्पत्ति के कारण निम्नलिखित हैं —

1 निरन्तर प्रयोग के कारण → स्थायी संपत्तियों के निरन्तर प्रयोग होने से उनके मूल्य में कमी हो जाती है। यदि ~~किसी संपत्तिया~~ 2000 रु. में खरीदे गये

फर्नीचर को दो वर्ष बाद बेचे, तो कम मूल्य ही प्राप्त होगा।

2. समय व्यतीत होने के कारण → समय व्यतीत होने के साथ-साथ भी संपत्ति का मूल्य कम हो जाता है। चाहे वह प्रयोग की जाये अथवा नहीं।

3. अप्रचलन के कारण → नयी तकनीकों के आविष्कारों के कारण नयी मशीनें बाजार में आती हैं। नयी मशीनों के कारण पुरानी मशीनें अप्रचलित हो जाती हैं, जिससे उनका कम मूल्य ही प्राप्त होता है।

4. दुर्घटना के कारण → दुर्घटनाग्रस्त संपत्ति को बेचने पर भी कम मूल्य की प्राप्त होता है, क्योंकि वह क्षतिग्रस्त हो जाती है।

5. बाजार मूल्य में स्थायी गिरावट → संपत्तियों के मूल्य बाजार में परिवर्तित होते रहते हैं। अतः प्रयोग में आ रही संपत्ति का मूल्य भी कम हो जाता है।

BSEMP

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

(1)

1. केन्द्र की सील
2. पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील
4. केन्द्र क्रमांक C. No. 62005
6. परीक्षा का नाम हायर सेकेंडरी
7. विषय बहीखाता 8. माध्यम हिन्दी
8. दिनांक 29-03-07

पृष्ठ

परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

6. मूल पदार्थों का समाप्त हो जाना → मूल पदार्थों के समाप्त होने से भी संपत्तियों का मूल्य कम हो जाता है। जैसे – कोयले की खान मे कोयला निकालने के बाद उसमे कम मूल्य ही प्राप्त होगा।

उत्तर क्र. 30

हर्ष लि० की पुस्तक

विवरण		खा. पृ.	रकम (डे.)	रकम (क्रे.)
अंशपूंजी खाता (2000X10)	डे.		20,000	
10. बकाया याचना खाता (2000X5)				10,000
" अंश हरण खाता (2000X5)				10,000
(अंशों का हरण करने पर)				
B.F			20,000	20,000

26

68	+	5	=	73
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 2 के अंक		कुल अंक

C.F.		20,000	20,000
बैंक खाता डे.		19,000	
अंश हरण खाता डे.		1000	
To, अंशपूँजी खाता			20,000
(अंशों का पुनर्निर्गमन करने पर)			
अंश हरण खाता डे.		9000	
To, पूँजी संचय खाता			9000
(अंश हरण की राशि को पूँजी संचय में ले गये)			
योग		49,000	49000

उत्तर क्र. 28

अंजू लि. की पुस्तक

विवरण	खा. पृ.	रकम (डे.)	रकम (क्रे.)
व्यवसाय क्रय खाता डे.		2,20,000	
To, विक्रेता का खाता			2,20,000
(व्यवसाय क्रय किया)			
विक्रेता का खाता डे.		2,20,000	
To, 10% ऋणपत्र खाता			2,20,000
(विक्रेता को क्रय मूल्य के भुगतान पर ऋणपत्र निर्गमित किये)			
योग		4,40,000	4,40,000

उत्तर क्र. 27

नाम नकल बही
पन्ना नं. 10

।।श्री लक्ष्मीजी सदा सहाय होवे श्रीशुभमिति कार्तिक बदी 2, सम्वत 2069 सोमवार दिनांक 18 सित-2008।।

26,208) श्री माल खाते जमा
6900) श्री राम के खाते नामे
6000) गेहूँ 10 क्विंटल दर 600 रु. प्रति क्विंटल
100) बारदाना गाड़ीभाड़ा हम्माली
50) 30) 20)
6100)

20,108) श्री रहीम के खाते नामे
20,000) गेहूँ 20 क्विंटल दर 1000 रु. प्रति क्विंटल
108) बारदाना हमाली
100) 8)
20,108)
26,208)

BSEMP

5

...के अंकों का योग

78	+	4	=	82
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक

उत्तर क्र. 21

अ यंत्र खाता (स्थायी किस्त पद्धति)

Dr. Cr.

दि.	विवरण	रकम	दि.	विवरण	रकम
I Year	To, रोकड़ खाता	20,000	I Year	By मूल्यह्रास खाता	200[illegible]
				" शेष नी/ले.	18,00[illegible]
		20,000			20,00[illegible]
II	To, शेष नी/ला.	18,000	II	By, मूल्यह्रास खाता	200[illegible]
				" शेष नी/ले	16,00[illegible]
		18,000			18,00[illegible]
III	To, शेष नी./ला.	16,000	III	By मूल्य ह्रास खाता	200[illegible]
				" शेष नी/ले.	14,00[illegible]
		16,000			16,00[illegible]

4

अंकों का योग

29

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

केन्द्र की सील

पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक 22-03-07

केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सील

केन्द्र क्रमांक C. No 63095

परीक्षा का नाम हायर सेकेंडरी

विषय बहीखाता 8. माध्यम हिन्दी

दिनांक

परीक्षक के लिये

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

Dr. ब यंत्र खाता (घटती शेष पद्धति) Cr.

दि.	विवरण	रकम	दि.	विवरण	रकम
I Year	To, रोकड़ खाता	20,000	I Year	By मूल्य ह्रास खाता	2000
				" शेष नी./ले.	18,000
		20,000			20,000
II	To. शेष नी/ला.	18,000	II	By मूल्यह्रास खाता	180[illegible]
				" शेष नी./ले.	1620[illegible]
		18,000			1800[illegible]
III	To, शेष नी/ला.	16,200	III	By मूल्यह्रास खाता	162[illegible]
				" शेष नी./ले.	1458[illegible]
		16,200			1620[illegible]

अंकों का योग

पृष्ठ

82	+	3	=	85
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 2 के अंक		कुल अंक

उत्तर क्र. 16

पूँजीकरण विधि के आधार पर ख्याति की गणना करने की दो ~~विविद~~ विधियाँ हैं:-

अ. औसत लाभ का पूँजीकरण करना →

इस विधि के अंतर्गत गत वर्षों के लाभ के आधार पर औसत लाभ निकाला जाता है। फिर औसत लाभ निकालने के बाद निम्नलिखित सूत्र द्वारा ख्याति की गणना की जाती है -

$$\text{ख्याति} = \frac{\text{औसत लाभ} \times 100}{\text{सामान्य ब्याज की दर}} - \text{शुद्ध संपत्तियाँ}$$

ब. अधिलाभ का पूँजीकरण करना →

इस विधि में गत वर्षों के ~~अ~~ लाभ के आधार पर औसत लाभ निकाला जाता है, फिर उस औसत लाभ की तुलना सामान्य लाभ से की जाती है, जो अंतर होता है वह अधिलाभ कहलाता है। फिर निम्नलिखित सूत्र द्वारा ख्याति निकाली जाती है -

$$\text{ख्याति} = \frac{\text{अधिलाभ} \times 100}{\text{सामान्य ब्याज दर}}$$

BSEMP

3

पृष्ठ 31

85	+	2	=	87
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 3 के अंक		कुल अंक

उत्तर क्र 15

वर्ष 2005 के आय-व्यय खाते में लिखी जाने वाले चंदे की राशि —

वर्ष 2005 में प्राप्त चंदा	50,000
– 2004 का बकाया चंदा	2000
	48,000
– 2006 के अग्रिम चंदा	4000
	44,000
+ 2005 का बकाया चंदा	3000
	~~43,000~~
Ans	47,000

वर्ष 2005 के आय-व्यय खाते में 47,000 रु. चंदे में लिखे जायेंगें।

उत्तर क्र 12

एक गैर व्यापारिक संस्था का अंतिम चिट्ठा बनाते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए —

1. गतवर्ष के पूँजीकोष में आधिक्य हो तो जोड़ना चाहिए अथवा घाटा को हो घटाना चाहिए।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग 3

योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 4 के अंक		कुल अंक
90	+	2	=	92

2. पिछले वर्ष की संपत्तियों में ~~नव~~ चालू वर्ष में खरीदी संपत्तियों का जोड़ देना चाहिए, जो कि प्राप्ति - भुगतान खाते में होगी।

3. संपत्तियों में से मूल्य ह्रास घटाना चाहिए।

4. यदि कोई कोष उपलब्ध है, तो उसे दायित्व पक्ष में लिखना चाहिए।

5. समस्त अदत्त व्यय व अनुपार्जित आय दायित्व पक्ष में व पूर्वदत्त व्यय व उपार्जित आय संपत्ति पक्ष में लिखना चाहिए।

उत्तर क्र. 8

नाम नकल बही में निम्नलिखित सौदों को नहीं लिखा जाता है →

1. नकद बेचे गये माल का।
2. रोकड़ की प्राप्ति या भुगतान का।
3. उधार या नकद क्रय किये गये माल का।

2

...ों का योग

92